पाश्चात्य दर्शन का इतिहास

History of Western Philosophy

TDC Part-II

डॉ. विजय कुमार

दर्शनशास्त्र विभाग

लंगट सिंह कॉलेज, मुजफ्फरपुर

बेनेडिक्टस स्पिनोजा

(Benedictus Spinoza)

द्रव्य की अवधारणा

(Concept of Substance)

देकार्त की भाँति स्पिनोजा ने भी दार्शनिक सत्यों की खोज के लिए गणित की विधि को आधार माना है। खासकर ज्यामिति को। देकार्त और स्पिनोजा के विचारों में समानता कोई आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि दोनों ही बुद्धिवादी दार्शनिक हैं। स्पिनोजा की यह धारणा है कि ज्यामिति ही दार्शनिक समस्याओं के समाधान में सक्षम है। जिस प्रकार ज्यामिति के आधार वाक्यों की सत्यता मान लेने पर अन्य वाक्यों की सत्यता स्वयंसिद्ध हो जाती है उसी प्रकार दर्शनशास्त्र में ईश्वर को आधार–वाक्य मान लेने पर जगत् की सारी वस्तुओं, तथ्यों, घटनाओं आदि से सम्बन्धित समस्याएँ सुलझ जाती हैं। जगत् की सभी वस्तुएँ ईश्वर पर निर्भर करती हैं। जगत् में ऐसा कुछ भी नहीं जिसकी सत्यता द्रव्य के अभाव में स्वीकार की जा सके।

स्पिनोजा ने कहा कि द्रव्य से मेरा अभिप्राय यह है कि जो अपने अस्तित्व का आधार स्वयं है या जिसके सम्बन्ध में विचार करने के लिए या जानने के लिए किसी अन्य भावना की आवश्यकता न हो। अर्थात् जिस प्रत्यय का कोई दूसरा प्रत्यय न हो। स्पिनोजा के अनुसार ईश्वर ही वह द्रव्य है जो स्वयं में है तथा उसका ज्ञान भी उसी के माध्यम से हो सकता है। ईश्वर जो अद्वैत है, परम स्वतंत्र है, सबका कारण होते हुए भी स्वयं अकारण है, स्वयंभू है, स्वत:सिद्ध है।

देकार्त और स्पिनोजा दोनों ही बुद्धिवादी दार्शनिक हैं परन्तु दोनों की द्रव्य की अवधारणा भिन्न हैं। देकार्ते ने तीन द्रव्यों की अवधारणा स्वीकार की थी जिसमें उन्होंने ईश्वर को निरपेक्ष द्रव्य तथा जड़ और आत्मा को सापेक्ष द्रव्य माना. किन्तु स्पिनोजा ने ईश्वर, विश्व, प्रकृति आदि सभी को एक ही द्रव्य के विभिन्न नाम माना। कहने का अभिप्राय है कि स्पिनोजा ने सिर्फ़ एक ही द्रव्य को माना। यदि एक से अधिक द्रव्य स्वीकार कर लिया जाए तो वे एक-दूसरे को सीमित कर देंगे और उनमें पारस्परिक निर्भरता आ जायेगी। स्पिनोजा ने द्रव्य के कुछ लक्षण बताए हैं-

आत्मनिर्भरता – द्रव्य स्वतंत्र तथा आत्मनिर्भर है।

निरपेक्षता – द्रव्य अपनी सत्ता अथवा ज्ञान के लिए किसी की अपेक्षा नहीं रखता।

स्वयंसिद्धता – द्रव्य अपनी सत्ता के लिए किसी पर आश्रित नहीं है, यह द्रव्य की मुख्य विशेषता है। द्रव्य के अस्तित्व के लिए किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वह आत्मनिर्भर है। द्रव्य या ईश्वर का सारतत्त्व और अस्तित्व दोनों एक ही है।

पूर्णता – द्रव्य पूर्ण एवं आप्तकाम है, इसलिए अपूर्ण नहीं हो सकता। क्योंकि जो अपूर्ण है वह निरपेक्ष, स्वतंत्र तथा असीम नहीं हो सकता। अतः द्रव्य पूर्ण है।

स्वयंभू – स्वयंभू अर्थात् जो अपने से उत्पन्न हुआ हो। जो अपनी उत्पत्ति का स्वयं कारण है। ईश्वर सबका कारण है परन्तु उसका कोई कारण नहीं है।

अन्तर्यामी – द्रव्य सृष्टि के कण-कण में व्याप्त है।

अविनाशिता – द्रव्य चूँकि अपतिवर्तनशील है, अतः वह विनाशी नहीं हो सकता, क्योंकि विनाश का अर्त होता है परिवर्तन।

अद्वितीयता – द्रव्य अद्वितीय अर्थात् उसके अतिरिक्त अन्य कोई वस्तु नहीं है।

अनिर्वचनीयता – द्रव्य निर्गुण और अनिर्वचनीय है। हमारी बुद्धि उसे पूर्णरूपेण नहीं जा सकती क्योंकि मानव एवं उसकी शक्तियाँ सीमित हैं, इसलिए वह उसकी व्याख्या करने में अक्षम है। व्याख्या उसकी की जा सकती है जिसमें कोई गुण हो, किन्तु द्रव्य निर्गुण है। किसी वस्तु का गुण बताना उस वस्तु को उस गुण द्वारा सीमित कर देना है। स्पिनोजा का कथन है कि कोई भी व्याख्या निषेध का सूचक है। यदि हम कहते हैं कि कलम पीली है तो हम उसमें नीले, लाल, काले आदि रंगों का निषेध करते हैं। वस्तुतः द्रव्य एक ऐसी सत्ता है जिसकी तुलना किसी दूसरी वस्तु से नहीं की जा सकती। अतः द्रव्य अनिर्वचनीय है।